पर्यटन के सामाजिक सरोकार:
चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

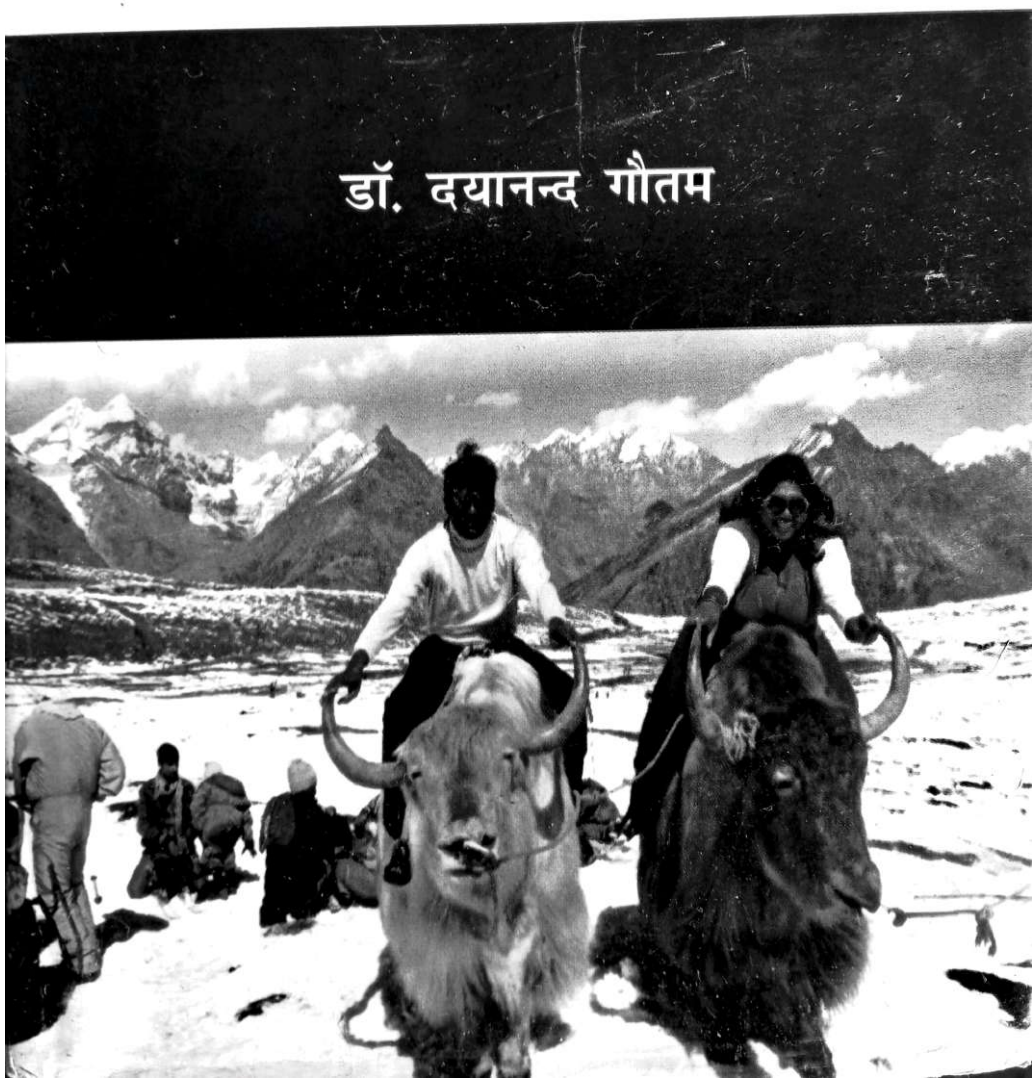

ISBN : 978-81-89482-90-0

© : लेखक

प्रकाशक : आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ई-10/663, उत्तरांचल कालोनी,
लोनी, गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 8375811307, 9968047183
email : fatehchand058@gmail.com

मूल्य : आठ सौ पचास रुपये

आवरण : एम. डी. सलीम

प्रथम संस्करण : 2017

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : पूजा ऑफसेट
दिल्ली-110093

Prayatan Ke Samajik Sarokar : Chunautiyan Evam Sambhavyey
By Dr. Dayanand Gautam

अनुक्रम

1. Key Note Address :
   Dr. Sonia Khan ---------- 11
2. पर्यटन और फिल्म 17
   डॉ. आशा देवी
3. सिरमौर में पर्यटन और संभावनाएं 23
   सौरभ सूद, सरिता बंसल
4. पर्यटन और आस्था का प्रतीक बाबा बालक नाथ मंदिर दियोटसिद्ध, हमीरपुर 33
   डॉ. पिंकी देवी
5. 21वीं सदी में पर्यटन उद्योग में मीडिया की भूमिका 38
   डॉ. पंकज
6. हिमाचल के इतिहास एवं पर्यटन के विविध आयाम 43
   'कन्हैया राम सैनी'
7. पर्यटन का बदलता परिदृश्य 55
   डॉ॰ मही योगेश
8. पर्यटन और सामाजिक सरोकार : चुनौतियाँ और संभावनाएँ 59
   मीरा ठाकुर
9. हिमाचल का इतिहास एवं पर्यटन के विविध आयाम 70
   लीना वैद्या
10. हिमाचल का इतिहास एवं पर्यटन के विविध आयाम 75
    डॉ. उमा शंकर जोशी
11. अंतर्देशीय पर्यटन: सामाजिक परिप्रेक्ष्य 83
    डॉ. दीपा शर्मा
12. पर्यावरण और हमारे कवि 90
    डॉ. रूपा सिंह
13. पर्यटन और हिन्दी सिनेमा 99
    डॉ. नीरू
14. जम्मू-कश्मीर में धार्मिक पर्यटन - एक सर्वेक्षण 105
    गोपाल सिंह

पर्यटन और फिल्म

- डॉ. आशा देवी

मनुष्य के जीवन में सदा से ही पर्यटन के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। पर्यटन के नाम मात्र से मनुष्य के मन में रोमांच की अनुभूति होती है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार पर्यटन का अर्थ 'विस्तृत भू–भाग में किया जाने वाला भ्रमण है।' वस्तुतः पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है।

मनुष्य में यात्रा की प्रवृत्ति जन्मजात है। प्राचीनकाल से ही धार्मिक पर्यटन के उदाहरण हमें ग्रंथों में प्राप्त होते हैं। राम चौदह वर्ष तक घूमते रहे। श्रवण कुमार अपने अंधे माता–पिता को तीर्थाटन के लिए लेकर गए। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए महेन्द्र और संघमित्रा चीन, बर्मा और नेपाल आदि दिशों में गए। महाभारत का युद्ध जीतने के पश्चात् मानसिक शांति और मोक्ष–प्राप्ति के लिए पाँचों पाण्डव द्रोपदी सहित हिमालय पर घूमते रहे। वेदों में भी कहा गया है कि मनुष्यों को ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि को देखना परखना और जानना चाहिए, जो कभी न नष्ट होती है और न पुरानी होती है। अतः यात्रा का उद्देश्य मोक्ष्य–प्राप्ति, मानसिक सुख और शांति समझा गया। ऐसी यात्राओं से देश के कोने–कोने से लोकर आकर विभिन्न तीर्थों, मंदिरों में एकत्र होते रहे जिससे एक लाभ यह भी हुआ कि उनके बीच परस्पर प्रेम और सौहार्द बढ़ा। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करने वाले लोग एक–दूसरे के व्यवहार, आचार–विचार और संस्कृति से प्रभावित भी होने लगे। अतः पर्यटन बहुप्रयोजनीय सिद्ध होने लगा। प्राचीन समय के पर्यटन में एक नवीन पहलू और जुड़ा और वह था पर्यटन–स्थल विशेष का आर्थिक और सामाजिक विकास।

विशेष रूप से आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर न केवल भारत अपितु विश्व के प्रत्येक देश की सरकारें पर्यटन को उद्योग मानकर उसके

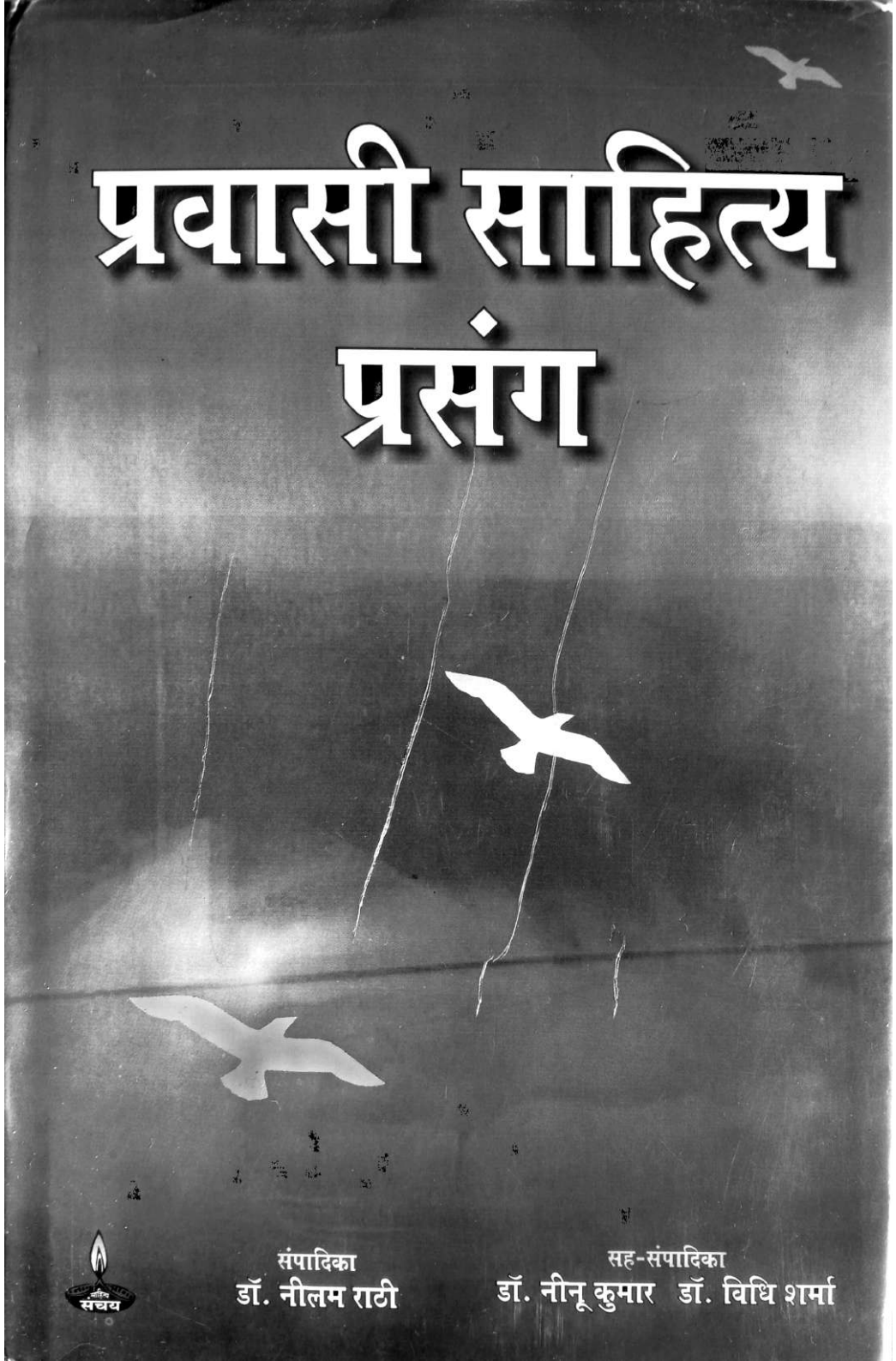

© लेखक

ISBN : 978-93-82597-98-8

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : एम. डी. सलीम

मूल्य : ₹ 900/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 35/- (अन्य देश)

HINDI UPNYASON ME AADIWASI JEEVAN
Edited by Dr. Neelam Rathi

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित, आवरण सज्जा एम डी सलीम तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

12. तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन 84
परवेज मुहम्मद
13. प्रवासी कथा-साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श 90
श्रवण कुमार
14. स्वदेश की पुकार 96
डॉ. अनीता मिंज
15. प्रेमचंद की कहानियों में प्रवासी-जीवन 100
मुवीन
16. प्रवासी जीवन पर आधारित फिल्मों में जीवंत भारतीय संस्कृति 107
डॉ. कुसुम लता
17. प्रवासी लेखिकाओं के कथा-साहित्य में स्त्री-विमर्श के स्वर..... 114
मौहम्मद वारिस
18. प्रवासी हिंदी कविता 119
डॉ. अनु कुमारी
19. प्रवासी भारतीय : सोच और साहित्य 124
डॉ. गीता कौशिक
20. सुधा ओम ढींगरा : कविताओं में स्त्री-स्वर..... 130
मीना बुद्धिराजा
21. प्रवासी हिंदी साहित्य चेतना..... 136
डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा
22. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा 144
डॉ. ममता
23. प्रवासी जीवन, हिंदी फिल्में और उनका यथार्थ..... 152
डॉ. मधु लोमेश
24. प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति 159
डॉ. आशा देवी
25. ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' के काव्य में भारत वर्णन 171
डॉ. अनिल शर्मा
26. अप्रवासी भारतीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक चुनौतियाँ..... 178
डॉ. अलका राठी
27. प्रवासी भारतीय–'क्या खोया क्या पाया' 187
निधि गोयल

आई एस. एस. नम्बर : 2348-8662
जनवरी – मार्च , 2014
आवधिकता: त्रैमासिक

वाद संवाद

साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद

वाद-संवाद

अंक - 1 (1)
जनवरी - मार्च , 2014
आई एस. एस. नम्बर : 2348 – 8662

स्वाक्षर
नई दिल्ली (भारत)

अनुक्रम

संपादकीय

1. आदिवासी लोकगीतों की लोक संस्कृति — 9
   डॉ. राम रतन प्रसाद
2. स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में अंतर्जातीय चेतना — 17
   डॉ. अनिल कुमार
3. फिल्मी गीत और बाज़ारवाद — 22
   डॉ. आशा देवी
4. अमृतलाल नागर के साहित्य में गाँधी, अम्बेडकर का प्रभाव — 32
   डॉ संतोष कुमार भारद्वाज
5. लोकतांत्रिक व्यवस्था में तीसरा मोर्चा — 41
   डॉ. राम रतन प्रसाद
6. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में आर्थिक संदर्भ — 45
   नरेन्द्र कुमार
7. भगवतीचरण वर्मा के साहित्य में व्यर्थता और सार्थकता-बोध — 50
   मीनाक्षी
8. रघुवीर सहाय की काव्यविषय धारणाएँ — 57
   बृजेश कुमार
9. पितृसत्तात्मक परिवार और सामाजिक परिवर्तन — 67
   सुरभि त्रिपाठी
10. रामविलास शर्मा के बहाने कुछ जरूरी सवाल (भाषा, इतिहास और संस्कृति के संदर्भ में) — 76
    डॉ. अनिल कुमार सिंह

सिनेमा का दायित्व / **डॉ. आशा देवी** -- 162

साहित्य, सिनेमा और समाज / **रत्नेश कुमार मिश्र** -- 166

सामाजिक मूल्य और फिल्मी गीत / **प्रो. (श्रीमती) प्रेम सिंह** -- 173

शिक्षा जगत् को दर्शाती 'चॉक एन डेस्टर' / **डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला** -- 181

बालमन और एनीमेशन फिल्में / **डॉ. अंकित कुमार श्रीवास्तव** -- 184

दलित चेतना और हिंदी सिनेमा / **डॉ. अनिल कुमार** -- 189

विभाजन की त्रासदी और सिनेमा / **डॉ. आशुतोष शर्मा** -- 199

अपराधवृत्ति के विकास में हिंदी सिनेमा की भूमिका / **डॉ. दीनदयाल** -- 204

नाटक और चलचित्र / **डॉ. अजय कुमार झा** -- 208

साहित्य और समाज का नया सच तथा हिंदी सिनेमा / **प्रताप सिंह** -- 212

साहित्य, सिनेमा और समाज / **डॉ. सत्येंद्र सिंह रंशल** -- 222

सिनेमा का दायित्व / **डॉ. श्रद्धा सक्सेना** -- 227

सिनेमा और समाज / **डॉ. ममता गोयल** -- 231

साहित्य, समाज और सिनेमा का अंतःसंबंध / **डॉ. पुष्पलता सिंह ठाकुर** -- 234

साहित्य, सिनेमा और समाज / **डॉ. महेंद्र कौशिक** -- 237

नैतिकता, बाजार और सिनेमा / **डॉ. कमलेश शर्मा** -- 242

परदे पर बढ़ती न्यूनावरणता और बाजार / **डॉ. राजकुमार सिंह** -- 250

गीतों में जिंदगी, जिंदगी में गीत / **प्रो. निर्मला राजपूत** -- 255

युवामन और वर्तमान हिंदी सिनेमा / **डॉ. हरदीप कौर** -- 261

डॉ. आशा देवी

सिनेमा का दायित्व

प्राचीन नाट्य-विधा की सभी सीमाओं को पार कर सिनेमा आज एक नवीन प्रभावकारी विधा के रूप में हमारे सामने है। मनोरंजन के बेहतरीन साधन के रूप में उसे हम सभी ने स्वीकार कर लिया है।

एक गैर-भारतीय टेकनीक के रूप में सिनेमा भारत में आया था, परंतु भारतीय सिनेमा को आधार देने वाले फिल्मकारों ने गैर-भारतीय टेकनीक का इस्तेमाल भारतीय चित्रों को उकेरने में इस प्रकार किया कि आज सिनेमा के सौ वर्षों बाद 'भारतीय सिनेमा' के रूप में विश्व में उसका अपना विशेष स्थान है, उसकी विशेष भाव-भंगिमा है, उसकी एक अलग पहचान है। यदि भारत को समझना हो, उसकी संस्कृति को समझना हो, भारतीय-फिल्मों से बेहतर और कोई साधन नहीं हो सकता।

भारतीय सिनेमा की शुरुआत ही अपने समाज के चित्रांकन से हुई थी। मनोरंजन के साथ-साथ समाज का सही चित्र प्रस्तुत करना उस दौर के सिनेमाई कर्णधारों का मुख्य ध्येय था। 'राजा हरिश्चंद्र' हो या फिर 'अछूत कन्या', ऐसी फिल्में समाज का आईना ही नहीं बनी थीं, अपितु समाज की दिशा-दर्शक भी बनी रहीं।

आज सिनेमा सौ वर्ष का हो चुका है। उसने हर बदलते दौर को महसूस ही नहीं किया, बल्कि कई मायनों को बदला भी। फिल्मों का ऐसा प्रभाव रहा कि समाज ने अपनी जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों और व्यवस्थाओं को तोड़ने, बदलने और नई व्यवस्थाएँ स्थापित करने का मन बनाया। चाहे सांप्रदायिक महत्त्व के प्रश्न हों, चाहे सामाजिक सरोकार के, बदलाव लाया गया। मानव जीवन और भारतीय समाज के वे सभी पहलू, जो साहित्य में अछूते रह गए थे, उन्हें बड़ी गंभीरता और बड़े साहस से बेहतरीन अंदाज में समाज के समक्ष प्रस्तुत करने में सिनेमा की विशेष भूमिका रही है।

हाँ, इन सौ वर्षों में सिनेमा जितना समाज-सापेक्ष रहा, उतना ही धीरे-धीरे बाजार